सत्य एँव अर्थ पूर्ण जीवन की खोज करने वालों के लिए

मृत्युंजय ख्रिस्त

लैमेन इवैंजलिक्ल फैलोशिप, (LEF,Chennai)

जुलाई-अगस्त, 2005

आध्यात्मिक स्थिरता

''तब वह इतनी जोर से चिल्ला-चिल्लाकर रोया कि मिस्रियों ने इसे सुना और फिरौन के घर के लोगों ने भी इसके बारे में सुना।'' उत्पत्ति (४५:२)

यूसुफ को परमेश्वर पर विश्वास करने का सौ-गुणा प्रतिफल मिला। एक नौजवान होते हुए भी उसने अपने आपको पवित्र रखा और अपने पिता का सम्मान तथा अपने भाइयों से प्रेम किया। परमेश्वर ने उसे ऐसा दिव्य स्वभाव दिया, जिसे बाहरी परिस्थितियाँ हिला न पायीं।

कई तरह से यूसुफ मसीह का प्रतीक है। एक स्थिर आध्यात्मिक जीवन तक पहुँचने पर, हर व्यक्ति की आर्थिक और आध्यात्मिक ज़रूरतों की देखभाल की जाती है। ऐसे लोग प्रमुख व्यक्ति बनकर समाज में ऊपर उठते हैं। ''तुम मेरे सब वैभव का जो मिस्र में है और वह सब जो तुमने देखा है, मेरे पिता से वर्णन करना। (पदः१३)'' वह ऐसा वैभव था, जिसे देखा और महसूस किया जा सकता है। जब बपतिस्मा देने वाले युहन्ना के चेले यीशु से पूछने आए कि क्या वह ही मसीह है, उसने कई अद्भुत कार्य दिखाये और उनसे कहा, ''जो कुछ तुमने देखा, जाकर उसे बताओ।'' वह ऐसा वैभव था जिसे देखा और महसूस किया जा सकता है।

परमेश्वर के सच्चे बच्चे झूठी आलोचना से नहीं घबराते। व्यवहारिक धर्म अतिसुन्दर चीज़ है। याकूब के दस पुत्रों में, जो याकूब के पुराने स्वभाव को पाये थे, सुरक्षा का एहसास नहीं था। वे हत्या का पाप अपने मन में छिपाये थे और

पृष्ठ २ पर..आध्यात्मिक स्थिरता..

मृत्युंजय ख्रिस्त
ON LINE

By Email:
post@lefi.org

At our Web Site:
http://lefi.org

ज्योति

एक बहुत महत्वपूर्ण विषय का बोझ मेरे मन पर है। हम यीशु के नाम को ऊँचा क्यों नहीं उठा रहे, अपने चारों ओर ज्योति की ऐसी बाढ़ नहीं ला रहे कि स्त्री-पुरुष स्पष्ट रूप से पहचान लें कि यीशु ही ज्योति का कर्ता है, यीशु ही धार्मिकता का सूर्य है, यीशु ही संसार की ज्योति है?

ऐसा क्यों है कि हमारे चारों ओर फैले अंधकार में हमारी ज्योति बड़ी कठिनाई से नज़र आती है? यह गहन विरोधाभास है, यहाँ तक कि यह कहा जा सकता है, ज्योति है भी या नहीं? यदि ज्योति है तो वह दिखनी चाहिए, क्योंकि चारों ओर गहन अंधकार है। मुझे यह बिलकुल समझ नहीं आता कि लोग कैसे पूरी तरह तर्कहीन हो गए हैं। यदि हमारी कलिसियाएँ ज्योति हैं तो हमारे चारों ओर अपराध की दर गिरनी चाहिए।

यदि आप ज्योति हैं, यदि हमारा परिवार ज्योति है, तब हमारे चारों ओर लोग यह कहते हुए जुटने चाहिए, ''कृपया, हमें वह रोशनी दीजिए जो आपको इतना उपयोगी, इतना आनंदित, इतना स्थिर और इतना सुरक्षित करती है।'' हमारे चारों ओर यह कहते हुए ऐसा शोर होना चाहिए, ''हमें यह रोशनी दो।'' संसार हमारी ओर देखे और यह कहे,''जो रोशनी तुम में है हमें भी चाहिए।'' ऐसा क्यों है कि जैसे रोशनी सामान्यतर ध्यान आकर्षित करती है वैसे हम भी ध्यान आकर्षित करें? ऐसा जान पड़ता है कि निशाचर भी किसी-न-किसी तरह रोशनी की ओर आकर्षित हो जाते हैं। एक बार एक निशाचर को मैंने डरते-डरते रोशनी के पास आते देखा। एक बार मैंने देर रात ज़मीन पर चलते एक जानवर को देखा, मानो कोई पक्षी हो, वह धीरे-धीरे रोशनी की ओर बढ़ रहा था जो मेरे तम्बु से निकल रही थी। मैंने कहा,''वह क्या है?'' मैं तम्बु से बाहर निकला और अच्छे से उसे देखा और पाया कि वह एक बड़ा बिच्छु था। मुझे नहीं मालूम, उस बिच्छु को क्या आकर्षण हुआ कि वह रोशनी की ओर चला आ रहा था, लेकिन मैंने अनेक बार ऐसे होते देखा है। ऐसे जन्तुओं की साधारण प्रतिक्रिया रोशनी से दूर जाना है, किसी अंधेरे कोने की खोज में। लेकिन मैंने कई बार यह पाया कि यह निशाचर रोशनी की ओर आ रहे थे, शायद किसी शिकार को पकड़ने जो रोशनी के आसपास हो।

हम मसीही हैं, ऐसा क्यों कहें? हम ऐसे क्यों कहें कि हम ज्योति में चलते हैं जैसे वह (परमेश्वर) ज्योति में है? हमारे प्रभु में कोई अंधकार नहीं। हमें यह बताया गया है कि उनमें कोई अंधकार नहीं। ठीक है, अब बताईये, क्या हमारे अंदर अंधकार है? क्या हमारे अंदर धुंधलापन है? तब हमारी ज्योति संसार के धुंधलेपन में क्यों नहीं चमक रही? अब यह विषय मेरे लिए बड़े दुख का विषय है। ज्योति के न होने के कुछ कारण हैं। मैं यह कहूंगा मैंने यह पाया है, लोग प्राथना करना नहीं जानते।

यदि कोई व्यक्ति सांस लेना बंद कर दे तो उसे मृत घोषित कर दिया जाता है। जब एक व्यक्ति कहे कि वह मसीही है और विश्वास के सांस की उसे आवश्यकता नहीं, आप निश्चित हो सकते हैं कि वह दरवाज़ें में गड़ी मरी हुई कील के समान है। यह बहस बिना चुनौती का सामना किये पूरी नहीं हो सकती कि मसीही उदाहरण तथा आशिष, बिना पर्याप्त प्रार्थना के जो ज्योति लाती है, संभव नहीं।

''क्योंकि उद्धार पानेवालों और नाश होने वालों दोनों के लिए परमेश्वर के निमित्त हम मसीह की सुगन्ध हैं। २ कुरिन्थियों (२:१५)'' हम परमेश्वर के सामने मीठी सुगंध हैं। यदि हम परमेश्वर के सामने मीठी सुगंध हैं, तब हम बड़े आकर्षक होने चाहिए। हम ऐसे आत्मिक आकर्षण की गुणवत्ता को खो रहे हैं। हम घिनौने क्यों बनें? हम घृणित क्यों बनें? हमारे अंदर कुछ और तथा बाहर दिखने में कुछ और,हम विरोधाभासी क्यों बनें? अपने चारों ओर गलत चिन्ह क्यों दें? यह

पृष्ठ २ पर..ज्योति..

पृष्ठ १ से..ज्योति..

बातें अबोधगम्य हैं। आप सच्ची मसीहत को इन विरोधी बातों के साथ नहीं जी सकते।

मैं मानता हूं कि सबसे पहले हम प्रचारकों को पश्चाताप करना चाहिए। मैं हमेशा मानता आया हूँ कि यदि प्रचारक सही है तो मण्डली में लोग भी सही होंगे। यदि प्रभु से नबूवत का शब्द पाया तो पाप उघड़ जाएगा। अंधकार के स्रोत का एक दम पता चल जाएगा और उसे सही किया जा सकता है। परन्तु प्रचारक बिना प्रार्थना के हो और जब नबूवत की ज्योति न हो, तब आप जानते हो कि वह परिस्थिति कितनी घोर और भयावह होगी। मैं मानता हूँ कि आज संसार में चारों ओर यह स्थिति है।

सच्चाई तो यह है कि आत्मिक जागृति न लाकर हम संसार का नाश कर रहे हैं, प्रार्थना में ताकत की कमी, और मंच पर प्रचारक के चरित्र पर प्रश्न चिन्ह। हम अपने को मसीही क्यों कहें यदि हमारी रोशनी ऐसे न चमक रही हो कि लोग हमारे भले कामों को देखें और हमारे स्वर्ग में पिता परमेश्वर की महिमा करें?

ज्योति देखी गई, ज्योति प्रज्ञवल है, ज्योति अंधेरे कोनों में उजाला देती है। लोग अपने चारों ओर उजाला चाहते हैं। क्या हम रोशनी के स्रोत हैं? क्या हम तब तक प्रार्थना करेंगे जब तक रोशनी न आ जाए? क्या हम रोशनी पैदा कर रहे हैं? क्या हम रोशनी दे रहे हैं? क्या हम हर अंधेरे कोने को उजाला दे रहे हैं? और, यह कितने दुख की बात है कि लोग मसीही सेवा में भी आराम और आसानी का ध्यान करते हैं, और अपने पद को पक्का करने की सोचते हैं। और जब वह अपनी जगह बना लेते हैं और आत्म संतुष्टि में बढ़ते हैं और ऐसे ही अन्य सुख विलास में, वह महसूस करते हैं कि दौड़ पूरी हुई। ऐसे बनना कितना शापित है, जो आसानी से अपने आराम सें संतुष्ट हो जाते हैं। कैसा शाप। क्या हमें अपने सुख और आराम की खोज के लिए बुलाया गया है? ओह, दूसरों के लिए उदाहरण बनने के लिए। ओह, दूसरों के लिए उत्साह बनने के लिए, जो उत्साहित होना चाहते हैं।

अब प्रिय पाठक, मैं ऐसे उदासीन, नीरस और निर्जीव उदाहण से समझौता नहीं कर सकता। हमें मसीह के बड़े निकट आकर उसे थामे रहना है। हमें उस सभी अंधकार के स्रोंतो से पश्चात्ताप करना है, जिन्हें हमने अपने अंदर आने दिया है। हमें परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य ठहरना है।
- जोशुआ दानियल।

पृष्ठ १ से..आध्यात्मिक स्थिरता..

परिणाम स्वरूप अपने सम्पूर्ण स्वभाव को विषैला बनाए थे। दिन का सूरज ढलने से पहले ही अपने पापों को स्वीकार करना भला है। ये लोग अपने पाप को कई सालों तक छिपाये रहे। जब उनके सामने यूसुफ की पहचान प्रकट हुई, तो वे यह जानकर भी कि उनका भाई जिन्दा है आनन्दित नहीं हो पाए। वे बहुत परेशान हो गए।

मगर यूसुफ काफी अलग था। भाईचारे और क्षमा से उसने उन सब को चूमा। वह दिव्य प्रेम था। इन भाइयों की ईर्ष्या ने उनके घर के आनन्द को बरबाद कर दिया था। जब-जब प्रेम बढ़ेगा, घर अधिक से अधिक सुन्दर बनेगा। यूसुफ के पास प्रेम और सिर्फ प्रेम था। उसको निकालकर बेचा गया और वह अपने भाइयों के बदले का शिकार बना। फिर भी उसका प्रेम का स्वभाव नहीं बदला। एक आदमी जो हर परिस्थियों में प्रेम का भाव रखता है वह हमेशा खुश और स्वस्थ रहता है।

''इसलिए प्रिय बालकों के सदृश परमेश्वर का अनुकरण करने वाले बनो, और प्रेम में चलो जैसे मसीह ने भी हम से प्रेम किया और सुखदायक सुगंधित भेंट बनकर हमारे लिए अपने आपको परमेश्वर के सम्मुख बलिदान कर दिया।'' इफिसियों (५:१,२) तुम प्रेम मे चलना चाहते हो। मगर जिस हृदय में पाप है उसमें से प्यार नहीं पैदा होता और दाग लगी अन्तरात्मा से विश्वास नहीं निकलता। परमेश्वर तुम्हारे आध्यात्मिक जीवन की सहायता कर, मज़बूत बनाना चाहते हैं। कभी-कभी परमेश्वर आंतरिक सम्पर्क के ज़रिये तुम्हारे आत्मा में काम करते हैं। तुम्हारी प्रार्थना ऐसे चरण पर पहुँचनी चाहिए जहाँ परमेश्वर से तुम्हारा स्थिर सम्पर्क बना रहे। कभी-कभी जब तुम वचन पढ़ते हो, परमेश्वर तुम्हरे विचारों द्वारा कार्य करते हैं। संतों की जीवनी तुम्हारे मन को अच्छे ज्ञान से सुसज्जित करती हैं। परमेश्वर का वचन तुम्हारे हृदय में होना चाहिए। जबतक तुम प्रार्थना में परमेश्वर के पास नहीं जाओगे तो परमेश्वर के वचन को अपने अवचेतन मन में नही रख पाओगे।

यूसुफ उनसे घृणा नहीं कर सका चाहे उन्होंने उसके खिलाफ कुछ भी करने का प्रयत्न किया। दाऊद ने शाऊल को मार डालने की कोशिश नहीं की, जबकि वह उसके हाथों में था। वह बदला नहीं लेना चाहता था। यूसुफ अपने भाइयों से गले मिलकर रोया। उनके बुरे कृत्यों को भी उसने ऐसा समझा जैसे वे परमेश्वर के कार्य हों।

एक मसीही व्यक्ति घृणा को प्रोत्साहित करने का कोई कारण नहीं रखता है, क्योंकि वह देखता है कि परमेश्वर ही उसे उन परिस्थियों में लाये हैं। यूसुफ के लिए परमेश्वर ने एक बुरी जगह को, आध्यात्मिकता के स्थिर स्थान में बदल दिया। तुम्हें एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। एक जेलखाने को वैभव वाले स्थान में बदलने वाला चरित्र तुम्हारे अन्दर होना चाहिए। यीशु मसीह में अपना जीवन सुरक्षित करो। अपने विश्वास की वृद्धि करो और तुम में एक नया स्वभाव पाया जाए। नेतृत्व करने की अभिलाषा नहीं रखना। बिना उच्चत्तम मसीही योग्यता के जिम्मेवारी वाले पद पर तुम अपना आत्मिक संतुलन नहीं रख पाओगे। यूसुफ एक देश का और अपने पिता के घराने का मुखिया बना। मसीह में बढ़ते हुए, तुम्हारे अन्दर एक स्थिर मसीही चरित्र होना चाहिए।
-एन दानिएल।

For More Details Please contact on any of the following Addresses.

ALLAHABAD : Beautiful Books, 194A, Old Mumford Ganj,Pin Code-211 002, Uttar Pradesh, Ph.0532-2642872.
BANSI : Eton English Medium School,Chitaunakothi,Siddharth Nagar Dt, Pin Code-272 153, Uttar Pradesh, ph.05545-255002
MUMBAI : Beautiful Books,Hotel Victoria, Ground Floor,SBS Marg,Near GPO, CST, Pin Code.400001, Ph.022-56334763/ 25008840
NOIDA(Delhi): Beautiful Books, Basement, Sharma Market, Atta, Sector-27, NOIDA, Uttar Pradesh Ph.09810776324.
GANGTOK : Beautiful Books, P.B.No.94,31A, National Highway, Below High Court, Sikkim, Pin Code.737101 Ph.03592-228733
GWALIOR : L-95, Madhav Nagar, Gwalior-474002, Madhya Pradesh. Ph.0751-2636434
SHILLONG : Beautiful Books, P.B.No.39, Nongrimbah Road, Laitumkarh,Pin Code.793003, 0364-2501355

नम्रता का नमक

''आदर प्राप्त करने से पूर्व नम्रता आती है'' नीतिवचन (१५:३३)

आत्मा का नम्र किया जाना, हमेशा अपने साथ सकारात्मक आशीष लाता है। यदि हम अपने मन से स्वार्थ निकाल दें तो परमेश्वर उसे अपने प्रेम से भर देंगे। यदि तुम स्वर्ग पर चढ़ना चाहते हो तो झुको। तुम दीनता में बढ़ो यदि ऊपर बढ़ना चाहते हो, क्योंकि स्वर्ग की मीठी संगति केवल दीन आत्माओं को मिलती है, केवल उन्ही को।

पूर्णतय नम्र आत्मा को परमेश्वर आशिष के लिए ना नहीं कहेंगे। 'धन्य हैं वे जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है' उसके सारे धन और निधि के साथ।

जहाँ तक आपके लिए आशिष सुरक्षित है परमेश्वर उतनी मात्रा में पूरी आशिष आपको देते हैं। यदि हमारे स्वर्गीय पिता परमेश्वर तुम्हारी घमंडी आत्मा को अपने पवित्र युद्ध में विजय पाने दें, तो तुम उनका मुकुट अपने सिर पर पहनोगे और अपने लिए एक नया शत्रु पैदा कर लोगे, जिसके तुम शिकार हो जाओगे, इसलिए तुम दीन किये जाते हो ताकि तुम्हारी सुरक्षा बनी रहे।

यदि एक व्यक्ति वास्तविक रूप से नम्र हो और कभी प्रशंसा के कण मात्र को छूने की परवाह न करे, परमेश्वर उसके लिए क्या करेंगे इसकी की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

सम्पूर्ण अनुग्रह के परमेश्वर से आशिष पाने के लिए नम्रता हमें तैयार करती है और अपने सहजनों से सही व्यवहार करने को तैयार करती है। सच्ची नम्रता ऐसा फूल है जो किसी भी बाग को सुन्दर बनाएगा। चाहे वह प्रार्थना हो या प्रशंसा, चाहे कार्य हो या दुख, नम्रता का नमक उसमें कभी अधिक साबित नहीं होगा।

- सी एच स्पर्जन।

एक मिश्नरी छात्र - जोनाथन गोफोर्थ के प्रारंभिक साल

जोनाथन गोफोर्थ का समर्पण कितना सम्पूर्ण था यह उनके आने वाले सालों में स्पष्ट नज़र आता था और इन घटनाओं को देख कर, जो उन्होंने अपनी एक बेटी को अपने पचहत्तरवें जन्मदिन पर लिखने का निर्देश दिया।

''अठारह वर्ष की आयु में मेरा हृदय परिवर्तन हुआ, जो बहुत साधारण मगर इतना सम्पूर्ण था कि तब से मैं पौलुस के साथ यह कह सका 'मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, अब मैं जीवित नहीं रहा, परन्तु मसीह मुझ में जीवित है,....। गलातियों (२:२०)' तब से मेरा जीवन उसका हो गया जिसने मेरे लिए अपना प्राण दे दिया।''

अगली कम्यूनियन सभा में जोनाथन कलिसिया का सदस्य बना और अपने नये मालिक (यीशु) की सेवा करने के लिए वह मार्ग में चलने लगा। इतवार-विद्यालय की एक कक्षा उसे दी गई, मगर उससे वह संतुष्ट नहीं हुआ। वह मसीही गवाही की पुस्तिकाएं लाया और हर रविवार वह चर्च के द्वार पर खड़े होकर हरेक को एक पुस्तिका देता, इस कारण वह उन निश्चल वयोवृद्धों के लिए एक विनोदी वस्तु बना तथा दूसरों के लिए अचंभा और जवानों के लिए मनोरंजन का विषय बना। जल्द ही उसने अपने घर से करीब एक मील या उस से ज्यादा दूरी पर एक पुरानी पाठशाला में रविवार को शाम की सभा का आरंभ किया।

उनके अपने शब्दों में, इसी समय की दो घटनाओं को हम यहाँ लिख रहे हैं:

''अपने हृदय परिवर्तन के समय मैं अपने भाई बिल के साथ रह रहा था। हमारे माता-पिता हमसे मिलने आये और लगभग एक महीना हमारे पास रूके। कुछ समय से मुझे ऐसा लग रहा था कि प्रभु मुझे पारिवारिक आराधना में अगुवाई करने को प्रेरित कर रहे हैं। इसलिए एक रात मैंने सबसे कहा,'आज रात आराधना प्रभु यीशु की आराधना करेंगे, इसलिए भोजन के बाद कृपया कहीं नही जाना।' पिताजी क्या कहेंगे मुझे इस बात का डर था, क्योंकि हमें भोजन से पहिले 'प्रभु का धन्यवाद' करने की भी आदत नहीं थी, तो कुटुम्ब आराधना करने पर क्या होगा? ''

''यशायाह की पुस्तक से मैंने एक अध्याय पढ़ा और कुछ टिप्पणी करने के बाद हम सब प्रार्थना करने के लिए अपने घुटनों के बल झुके। मुझे बड़ी राहत मिली, पिताजी ने विरोध में एक शब्द भी नही कहा। जब तक मैं घर पर था पारिवारिक आराधना ज़ारी रही। कुछ महीनों के बाद मेरे पिताजी ने प्रभु यीशु में अपना विश्वास रखा।''

नीचे लिखी घटना तब घटी जब वह अपने घर के खेतों से बारह मील की दूरी पर स्थित इन्गरसॉल में पाठशाला में पढ़ रहे थे।

''मेरा अध्यापक टॉम पेइन का तीव्र अनुयायी था। वह अपने मत में आने के लिए मेरी कक्षा के सभी लड़कों पर जोर डालता था। अपने सहपाठियों का उपहास और तर्क - विवाद मेरे लिए बर्दाशत से बाहर साबित होने लगा। अचानक मेरे विश्वास की नींव हिलने लगी। मैं हैरान और परेशान था। अपने पादरी या किसी मानवीय सहायता लेने के बदले सिर्फ परमेश्वर के वचन को ही निर्देशक के रूप में लेने के लिए, मैंने अपने आप को प्रेरित होता महसूस किया। सभी दूसरे कामों को छोड़, रात-दिन अधिक से अधिक समय मैं पवित्र शास्त्र (बाइबल) की छानबीन करता रहा, जब तक अंत में मेरे संदेह की छाया तक नहीं रही और मुझे ठोस आधार मिला।

मेरे सारे सहपाठी और अध्यापक भी उस अविश्वास से वापस लाये गये और वह अध्यापक मेरे आजीवन मित्रों में से एक बन गया। ''

हृदय परिवर्तन के समय से ही परमेश्वर उसका उपयोग करने लगे थे। मगर एक साल तक वह एक वकील और एक अच्छे राजनीतिज्ञ बनने की अभीलाषा रखे रहे और यह विश्वास कर रहे थे कि इस प्रकार वह परमेश्वर की सेवा करेंगे। मगर उनके स्वामी (प्रभु यीशु) की इस सेवक के लिए कुछ और ही योजनाएं थीं।

- चुना हुआ।

सत्य की परख!

यीशु ने फिर लोगों से कहा,''जगत की ज्योति मैं हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा वह अंधकार में न चलेगा, वरन् जीवन की ज्योति पाएगा।'' यूहन्ना (८:१२)

स्वर्ग की एक झलक

मैंने एक बार दिव्य दर्शन देखा, जिसने मुझे अपने मसीही जीवन को पहले से बढ़कर बड़ी गम्भीरता से लेने पर मज़बूर कर दिया।

इस दर्शन में मैंने अपने आप को मसीही गतिविधियों में सक्रिय पाया। मैं मसीही सभाओं में भाग लेता, सण्डे स्कूल में सिखाता और कभी-कभार बिमारों से भी मिलने जाता। इन सभी कामों में मैं निष्ठापूर्ण था और मुझे नहीं लगता कि मैं कोई दिखावा कर रहा था। सच तो यह है, मैं अपने आपको बड़ा शानदार मसीही गवाह मानता था।

अचानक, एक दिन मैं बहुत बिमार पड़ गया और मृत्यु के निकट आ गया। लेकिन मैं जानता था कि मैं मन फिराया मसीही हूँ, मैं जानता था कि मैं अपने उद्धारकर्ता के अनुग्रह पर निर्भर कर सकता हूँ। ऐसे में मैं बेहोश हो गया और अचानक मैंने अपने आप को स्वर्ग में पाया। परमेश्वर के संतो को वहाँ देख कर बड़ा अद्भुत लगा।

पहले तो मैं आनंद विभोर हो उठा, यह सोच कर कि मैं सुरक्षित हूँ और पाप से छूट गया हूँ और यह बात सत्य भी थी। लेकिन फिर मैं अकेलापन और उदासी महसूस करने लगा। मुझे ऐसा लगा कि मैं इन महिमापूर्ण संतों के बीच मिलने-जुलने योग्य नहीं हूँ।

मेरे विचार मेरे बीते जीवन की ओर गये और एक मिनेमा की भाँति मैंने अपने बीते जीवन को देखा। लेकिन आरंभ से अंत तक उस पर एक वचन लिखा था - 'क्षमा किया गया।' ''ओह, परमेश्वर की स्तुति हो,'' मैंने सोचा, ''मेरे पाप का लेखा अब नहीं रहा।''

लेकिन आगे जब अपने जीवन पर निगाह डाली तो मैं विचलित हो गया। उस लेखे ने मेरे विचार, भावनाएँ, कार्य इत्यादि दिखाए। उसने दिखाया कि कैसे और किन बातों पर मैंने धरती पर जीवन में अपना समय, योग्यता और धन जिसकी जिम्मेवारी परमेश्वर ने मुझे सौंपी थी, लगाया ।

मुझे संसार ऐसे दिखने लगा जैसे परमेश्वर को दिखता है -वासना, व्यभिचार, घृणा, जादूटोना, युद्ध, झूठ, पीठ पीछे बुराई करना, विद्रोह, लालच, अंहकार, पाखण्ड की दुर्गन्ध इत्यादि से भरा है। मैं अब देख सका कैसे करोड़ों लोग पाप द्वारा अंधे, लड़खड़ाते और नरक के गड्ढे में गिरते जा रहे हैं। मैंने उनकी द्रद भरी चीख भी सुनी जो पाप के जाल में फंसे है। लेकिन कोई भी उनकी सहायता करने को इच्छुक नही नजर आ रहा था।

मैं बहुत व्यस्त रहा (अपने धरती के जीवन में), मौज उड़ाने में, यहां तक की धार्मिक मौज।

अब मैंने अपने आप को देखा जैसे मैं परमेश्वर की निगाह में था, जब मुझे यह समझ में आने लगा कि मैंने अपना जीवन स्वार्थ में बिताया है, मुझे अपने ऊपर घिन आने लगी।

''काश ऐसा हो सके कि मैं वापस अपने बरबाद किये जीवन को पा सकूं।'' , मैने सोचा। लेकिन यह अब असंभव था। धरती पर मिले मौके बीत चुके थे। ''हे परमेश्वर'', मैंने सोचा,''अपने जीवन को पूरी तरह मसीह के लिए जीने को दुबारा मुझे किसी तरह मौका मिल जाए, उसके लिए मैं कोई भी दाम चुकाने को तैयार था।''

अचानक एक तेजस्वी संत मेरे पास आये। वह बोले कि वह धरती पर पाई मेरी विजय को सुनने के लिए मेरे पास आये हैं और यह सुनने के लिए कि किन लोगों को मैंने मसीही का सुसमाचार दिया। मैं क्या कह पाता? मुझे केवल अपना आराम और विलास का जीवन याद आ रहा था। मेरा जीवन केवल अपने आप को खुश करने की बातों से भरा था। उन्होंने अपने बेटे के बारे में पूछा। उनके बेटे का जीवन विद्राह से भरा था और वह मेरे निकट रहता था। ''क्या तुमने उसे मसीह के विषय में बताया? क्या उसके उद्धार की कोई आशा है?'' उन्होंने पूछा। जैसे ही मैंने उनका सवाल सुना मेरा दील डूबने लगा। मैं क्या जवाब दे पाता? मैं उस लड़के को औरउसकी समस्याओं को जानता था। लेकिन उसकी मुश्किलों में पड़ना नहीं चाहता था। मैंने उसको नज़रअंदाज़ किया। लड़के के पिता ने सच्चाई को भाँप लिया होगा, जब उसने मेरी चुप्पी को देखा। उन्होंने मेरी ओर अपने प्रति निराशा भरी और मुझे पर दया भरी निगाह डाली और धीरे से मुड़कर चले गये।

तब मैंने एक ओर तेजस्वी व्यक्ति को देखा। यह एक विधवा थी जिसका धरती पर जीवन बड़ी कठिनाईयों से भरा था और अपनी छोटी बेटी को छोड़ सारे बच्चों को उद्धार के मार्ग पर ले आयीं थीं। उन्होंने मुझे बताया कि संसार की खोखली चकाचौंध ने उनकी बेटी को बहका दिया था। यदि किसी ने उसको मसीही प्रेम दर्शाया होता तो वह अपनी आंखे खोल लेती। वह बोली,''तुम उसे जानते थे। क्या तुमने समय निकाल कर उससे बातें कीं?'' दुबारा मैं चुप था। मैंने अपना सिर झुका लिया, क्योंकि मैं उनकी उत्तर पाने की आशा से एकटक देखती आँखों का सामना नहीं कर पा रहा था।

जब मैं गहरी सोच में था। एक और व्यक्ति मेरे सामने आये। यह उस तेजस्वी व्यक्ति की आकृति थी जो धरती पर काले रंग का अफ्रीकी व्यक्ति था। उन्होंने अपना परिचय दिया और मुझसे उस मसीही मण्डली के बारे में पूछा जिनके बीच उन्होंने सेवा की थी और अपने साथियों के विषय में पूछा, जिन्हें पीछे छोड़ आये थे - उनमें से मैं कइयों को जानता था। ''क्या तुमने उनकी सहायता करने की कोशिश की?'' उन्होंने पूछा,''क्या तुम्हारा जीवन उनके लिए एक उदाहरण था? कृपया मुझे बताइये, क्या उन्हे उद्धार दिलाने का आपने कोई प्रयास किया?''

मैं उनकी मण्डली को जानता था। लेकिन मैंने न तो कभी उनका उत्साह बढ़ाया और न ही सहायता की। मैंने यह तर्क दिया कि मैं उनकी मण्डली से नहीं हूँ ओर वे मेरे विचारों वाले नहीं हैं और कई बातों में वे मुझसे अलग थे। लेकिन अब स्वर्ग की शुद्ध रोशनी में, मैं देख सका कि मैं आत्मिक अंहकार से भरा था। ''हे परमेश्वर'', मैंने सोचा,''क्या यह स्वर्ग है? क्या मेरे जीवन का स्वार्थ अनन्त काल तक मेरा पीछा करेगा? प्रभु, मैं आत्म ग्लानि से भरा हूं और बड़ा अयोग्य महसूसू कर रहा हूँ। काश, ऐसा हो सके कि मुझे दुबारा जीने का मौका मिल जाए।''

मैं बड़ा विचलित महसूस कर रहा था और आश्चर्य कर रहा था कि क्या मैं स्वर्ग में कोई आराम पा सकूंगा। मैंने अपने जीवन को बेकार के लक्ष्यों और क्षणिक आनन्द पाने में बरबाद कर दिया था, जबकि मैं उस समय का ऐसे बीज बोने मे उपयोग कर सकता था जो कभी न खत्म होने वाले स्वर्गीय फल पैदा करते।

तब मैने अद्भुत दृश्य देखा। अनेक सदियों के हजारों परमेश्वर के विश्वासयोग्य जन मेरे पास से गुज़र रहे थे। वे इश्वरों के समान नज़र आ रहे थे और उनके जैसा आनंद तथा सुन्दरता पाने के लिए मैं कुछ भी चुकाने के लिए तैयार था। तब मैंने यीशु को देखा, स्वंय राजाओं के महाराजा को। कैसी प्रेम भरी और प्रशंसा भरी निगाह अपने विश्वासयोग्य सेवकों पर डाली, मानो कह रहे हों,'' शाबास, मेरे विश्वासयोग्य भाइयों।'' आह, यीशु की वह नज़र। मुझे लगा कि सौइयों जीवन ऐसी प्रेम भरी प्रशंसा पाने के लिए उस पर न्यौछावर किए जा सकते हैं।

तब वह मुड़े और मुझे दया की दृष्टि से देखा मानो कह रहे हों, ''तुम अपने को, इन के बीच जिन्होंने मेरे सम्मान के लिए अपने जीवन को दांव पर लगाया है, सामंजस्य में नही पाओगे।''

''हे, परमेश्वर, हे परमेश्वर।'' मैंने पुकारा, ''मेरी शर्म को ढांप ले। काश मैंने उन अवसरों को मूल्यवान जाना होता जो आपने अपनी सेवा के लिए मुझे दिये थे। मैं क्यों इन खोखले लक्ष्यों तथा आराम के पीछे भागा? प्रभु मेरी सहायता कर।''

दया की बात यह हुई कि वह एक दर्शनमात्र था। मैं जगा और पाया कि मैं धरती पर ही हूँ। मेरे पास उनके लिए समपूर्ण जीवन जीने का अवसर था, जिसने मेरे लिए अपना सबकुछ न्यौछावर कर दिया था।

- विलियम बूथ।

पृष्ठ ४

कृपया पढ़ने के पश्चात मित्रों को दीजिए।